



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 98]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 19, 2000/आषाढ़ 28, 1922

No. 98]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 19, 2000/ASADHA 28, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जुलाई, 2000

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमाकर्ताओं की आस्तियां, दायित्व और ऋण शोधन क्षमता मार्जिन) विनियम, 2000

फा.सं.बी.वि.वि.प्रा/वि/7/2000.— प्राधिकरण, बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 26 के साथ पठित बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 114क की उपधारा (2) के खंड (म), खंड (य) और खंड (यक) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा सलाहकार समिति के परामर्श से, निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात्:-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ- (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमाकर्ताओं की आस्तियां, दायित्व और ऋण शोधन क्षमता मार्जिन) विनियम, 2000 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं (1) इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो--

(क) "अधिनियम" से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) अभिप्रेत है;

(ख) "प्राधिकरण" से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन गठित बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है।

(2) इसमें प्रयुक्त/ऐसे सभी शब्दों और पदों का, जो परिभाषित नहीं हैं, किन्तु बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) या उनके अधीन बनाए गए किन्हीं नियमों या विनियमों में परिभाषित नहीं हैं, किन्तु बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) या उनके अधीन बनाए गए किन्हीं नियमों या विनियमों में परिभाषित हैं, क्रमशः वही अर्थ होगा जो उन्हें उन अधिनियमों या नियमों या विनियमों में समनुदेशित किया गया है।

3. आस्तियों का मूल्यांकन- प्रत्येक बीमाकर्ता, अनुसूची 1 के अनुसार, प्ररूप-बी. वि. वि. प्रा. - आस्तियां-कक में आस्तियों के मूल्य का विवरण तैयार करेगा।

4. दायित्व की रकम का अवधारण- प्रत्येक बीमाकर्ता, यथास्थिति, जीवन बीमा कारबार की बाबत, अनुसूची 2क के अनुसार, और साधारण बीमा कारबार की बाबत प्ररूप जछ में अनुसूची 2ख के अनुसार, दायित्वों की रकम का विवरण तैयार करेगा।

5. ऋण-शोधन क्षमता में मार्जिन का अवधारण- प्रत्येक बीमाकर्ता, यथास्थिति, जीवन बीमा कारबार की बाबत अनुसूची 3क के अनुसार और साधारण बीमा कारबार की बाबत प्ररूप ट छ में अनुसूची 3ख के अनुसार, ऋण शोधन क्षमता मार्जिन का विवरण तैयार करेगा।

6. स्वास्थ्य बीमा कारबार- जहां कोई बीमाकर्ता स्वास्थ्य कवर उपलब्ध कराने वाले स्वास्थ्य बीमा कारबार में संव्यवहार करता है, वहां दायित्वों की रकम का अवधारण इन विनियमों के अधीन विनिर्दिष्ट सिद्धांतों के अनुसार, किया जाएगा।

7. भारत से बाहर कारबार- जहां बीमाकर्ता भारत से बाहर किसी देश में बीमा कारबार में संव्यवहार करता है और उस देश के लोक प्राधिकारी को विवरण या विवरणी या ऐसी कोई विशिष्टियां जमा करता है, वहां वह उन्हें, इन विनियमों और बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमांकिक रिपोर्ट और संक्षिप्ति) विनियम, 2000 के अनुसार, विनिर्दिष्ट प्ररूपों के साथ उपाबद्ध करेगा:

परन्तु यह कि यदि नियुक्त बीमांकक की राय में भारत से बाहर किसी देश के लोक प्राधिकारी को जमा कराए गए किसी विवरण या विवरणी या किन्हीं ऐसी विशिष्टियों में दर्शित आरक्षिती से अधिक अतिरिक्त आरक्षिती नियत करना आवश्यक है तो वह ऐसी अतिरिक्त आरक्षिती नियत कर सकेगा।

8. प्ररूपों का दिया जाना- बीमाकर्ता द्वारा भारत के भीतर और संव्यवहार किए गए कुल कारबार के लिए पृथक् रूप से प्ररूप बी. वि. वि. प्रा.-आस्तियां-कक, प्ररूप जछ और प्ररूप टछ नामक प्ररूप दिए जाएंगे।

9. नियुक्त बीमांकक की प्राधिकारी से वैयक्तिक बैठ- प्राधिकारी, यदि आवश्यक और समीचीन समझे तो नियुक्त बीमांकक को, उससे कोई अन्य जानकारी लेने के लिए, व्यक्तिगत तौर पर प्राधिकारी के कार्यालय में आने के लिए कह सकेगा।

अनुसूची 1

आस्तियों का मूल्यांकन

(विनियम 3 देखिए)

1. निर्वचन - इस अनुसूची में जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, 'आदेशाधीनतर निवेशों' से ऐसे निवेश अभिप्रेत हैं जो न तो अनुमोदित प्रतिभूतियां हैं और न ही अनुमोदित निवेश हैं।

2. आस्तियों का मूल्यांकन- (1) निम्नलिखित आस्तियों का मूल्य शून्य रखा जाना चाहिए।

(क) अभिकर्ता के भारत में अतिशेष और बकाया प्रीमियम, उस सीमा तक, जहां वे तीस दिन की अवधि के भीतर बसूल नहीं होते;

(ख) अभिकर्ता के भारत से बाहर अतिशेष और बकाया प्रीमियम, उस सीमा तक जहां वे वसूलनीय नहीं हैं;

(ग) अन्यान्य ऋण, उस सीमा तक जहां वे वसूलनीय नहीं हैं;

(घ) अवसूलनीय स्वरूप के अग्रिम;

(ङ) फर्नीचर, फिक्सचर, अनुप्योज्य स्टॉक और लेखन सामग्री;

(च) आस्थगित खर्च;

(छ) लाभ और हानि विनियोग खाते का अतिशेष और पूर्व संदत्त खर्चों से अन्य कोई कल्पित आस्तियां;

(ज) पुनर्बीमाकर्ता के तीन मास से अधिक के लिए बकाया अतिशेष;

(झ) कंपनी के निर्माण में प्रारंभिक खर्च;

(2) कंप्यूटर उपस्कर के, जिसमें साफ्टवेयर भी सम्मिलित है, मूल्य की संगणना निम्नवत की जाएगी:—

(i) क्रय के वर्ष में इसकी लागत का पचहत्तर प्रतिशत;

(ii) दूसरे वर्ष में इसकी लागत का पचास प्रतिशत;

(iii) तीसरे वर्ष में इसकी लागत का पच्चीस प्रतिशत; और

(iv) इसके पश्चात् शून्य प्रतिशत।

(3) बीमाकर्ता की अन्य सभी आस्तियों का मूल्यांकन बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमा कंपनी की वित्तीय विवरणों और लेखा परीक्षक की रिपोर्ट का तैयार किया जाना) विनियम, 2000 के अनुसार किया जाएगा।

3. आस्तियों का विवरण- प्रत्येक बीमाकर्ता प्ररूप बी. वि. वि. प्रा.-आस्तियां-कक में आस्तियों का विवरण तैयार करेगा।

प्ररूप बी. वि. वि. प्रा. - आस्तियां-कक

(विनियम 3 देखिए)

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमाकर्ताओं की आस्तियां, दायित्व और ऋण शोधन क्षमता मार्जिन) विनियम, 2000

31 मार्च, 20 — की आस्तियों का विवरण

प्ररूप कोड : [] [] [] [] [] [] [] [] [] []

बीमाकर्ता का नाम:	रजिस्ट्रीकरण संख्यांक:	रजिस्ट्रीकरण की तारीख:
वर्गीकरण: भारत के भीतर कारबार/कुल कारबार		
मद सं०	आस्तियों का प्रवर्ग	पालिसीधारकों की निधि: शेयरधारकों की निधि:
		नीचे (क) के अनुसार नीचे (क) के अनुसार रकम (लाख रु० में) रकम (लाख रु० में)
1	2	3 4
1	अनुमोदित प्रतिभूतियां	
2	अनुमोदित निवेश	
3	निक्षेप	
4	आदेशाधीनेतर निवेश	
5	अन्य आस्तियां, विनिर्दिष्ट करें	
6	योग	
7	उचित मूल्य परिवर्तन लेखा	
8	आस्तियों का समायोजित मूल्य	
(6) - (7)		

मैं यह प्रमाणित करता हूं कि विवरण अनुसूची 1 के अनुसार तैयार किया गया है।

स्थान:

तारीख:

नियत बीमांकक का नाम और
हस्ताक्षर (जीवन बीमाकर्ता की दशा में)लेखापरीक्षक का नाम और हस्ताक्षर
(साधारण बीमाकर्ता की दशा में)

टिप्पण: विवरण अनुसूची 1 में विनियम 2 के अनुसार, उपरिवर्णित प्रवर्गों की आस्तियों का मूल्य दर्शाएगा।

अनुसूची 2क

दायित्वों का मूल्यांकन - जीवन बीमा

(विनियम 4 देखिए)

1. निर्वचन - इस अनुसूची में-

(क) बीमांकिक अन्वेषण के संबंध में "मूल्यांकन तारीख" से ऐसी तारीख अभिप्रेत है जिससे अन्वेषण संबंधित है।

(ख) "सर्वव्यापी जीवन संविदाओं" से ऐसी संविदाएं अभिप्रेत हैं जो सामूहिक रूप में प्रदान नहीं की जाती। ऐसी संविदाओं को, जिनमें पालिसीधारकों के पास बीमाकर्ता की पृथक्कृत निधि (यों) में निवेश करने का विकल्प है, "संबद्ध कारबार" माना जाएगा; और अन्य संविदाओं को 'गैर-संबद्ध कारबार' माना जाएगा।

(ग) "पृथक्कृत निधियों" से संबद्ध कारबार की बाबत निश्चित निधियां अभिप्रेत हैं।

2. गणितीय आरक्षितियों के अवधारण की पद्धति - (1) गणितीय आरक्षितियों का अवधारण, प्रत्येक संविदा के लिए पृथक् रूप से, उपपैरा (2) से (4) के अनुसार, मूल्यांकन की पूर्वक्षित पद्धति द्वारा किया जाएगा।

(2) मूल्यांकन पद्धति, ऐसे सभी पूर्वक्षित आकस्मिक व्ययों को गणना में लेगी, जिनके अधीन पालिसी की शर्तों द्वारा यथा अवधारित कोई प्रीमियम (पालिसीधारक द्वारा) या फायदे (पालिसीधारक हिताधिकारी को) पालिसी के अधीन संदेय हो सकेंगे। फायदों का स्तर पालिसीधारकों की युक्तियुक्त प्रत्याशाओं (बोनस के, जिसमें सेवांत बोनस भी, यदि कोई हो, सम्मिलित है, संबंध में) को और फायदों के संदाय के लिए स्थापित परिपाटी को भी संगणना में लेगा।

(3) मूल्यांकन पद्धति, ऐसे किन्हीं विकल्पों की लागत को भी गणना में लेगी, जो पालिसीधारक को संविदा के निबंधनों के अधीन उपलब्ध हैं।

(4) प्रत्येक पालिसी के अधीन दायित्वों की रकम का अवधारण, सभी सुसंगत पैरामीटरों की प्रज्ञापूर्ण धारणाओं को गणना में लेगा। ऐसे प्रत्येक पैरामीटर का मूल्य बीमाकर्ता के प्रत्याशित अनुभव पर आधारित होगा और इसमें प्रतिकूल विचलन के लिए समुचित अंतर भी सम्मिलित होगा जिसे इसमें इसके पश्चात् एम ए डी कहा जाएगा), जिसके परिणामस्वरूप गणितीय आरक्षिती में वृद्धि हो सकेगी।

5. (i) किसी पालिसी की बाबत मूल्यांकन तारीख को उपपैरा (4) के अनुसार, अवधारित गणितीय आरक्षिती की रकम ऋणात्मक भी हो सकेगी (जिसे ऋणात्मक आरक्षिती कहा जाएगा) या उपलब्ध प्रत्याभूत अभ्यर्पण मूल्य (जिसे "प्रत्याभूत अभ्यर्पण मूल्य कमी आरक्षिती" कहा जाएगा) से कम हो सकेगी।

(ii) नियत बीमांकक, अधिनियम की धारा 35 के प्रयोजन के लिए ऐसी गणितीय आरक्षिती की रकम को बिना किसी उपांतरण के प्रयोग करेगा;

(iii) नियत बीमांकक, अधिनियम की धारा 13, 49, 64फ और 64फक के प्रयोजन के लिए, ऐसी गणितीय आरक्षिती का मूल्य, यथास्थिति, ऋणात्मक आरक्षिती की दशा में, शून्य या ऐसे प्रत्याभूत अभ्यर्पण मूल्य कमी आरक्षिती की दशा में, प्रत्याभूत अभ्यर्पण पर नियत किया जाएगा।

(2) मूल्यांकन पद्धति को "सकल प्रीमियम पद्धति" कहा जाएगा।

(3) यदि नियत बीमांकक की राय में, सकल प्रीमियम पद्धति से अन्य कोई मूल्यांकन पद्धति अपनाई जानी है तो अन्य अनुमानों (उदाहरणार्थ भतलक्षी पद्धति) का प्रयोग किया जा सकेगा;

परंतु यह कि संगणित आरक्षिती की रकम, कम से कम उस रकम के बराबर प्रत्याशित होगी, जो सकल प्रीमियम पद्धति के उपयोग से प्राप्त होती है।

(4) दायित्वों के रकम की संगठना की पद्धति और मूल्यांकन पैरामीटरों के लिए धारणाएं एक वर्ष से अगले वर्ष में मनमाने ढंग से बंद करने के अधीन नहीं होंगी।

(5) गणितीय आरक्षितियों के रकम का अवधारण, उन दायित्वों का प्रतिनिधित्व करने वाली आस्तियों की प्रकृति और निबंधन तथा उन पर रखे गए मूल्य को गणना में लेगा और इसमें आस्तियों के मूल्य और बीमाकर्ता के, पालिसी के अधीन आने वाली बाध्यताओं को, जैसे-जैसे वे आती हैं, पूरा करने के सामर्थ्य में संभावित भावी परिवर्तनों के विरुद्ध प्रज्ञापूर्ण उपबंध भी सम्मिलित होंगे।

3. पालिसी नकदी का प्रवाह- मूल्यांकन की सकल प्रीमियम पद्धति निम्नलिखित भावी पालिसी नकदी के प्रवाह को समुचित ब्याज दर पर बढ़ा देगी,-

(क) संदेय प्रीमियमों, यदि कोई हों, मृत्यु पर संदेय फायदों, यदि कोई हों, जीवित बच जाने पर संदेय फायदों, यदि कोई हों; संविदा के स्वैच्छिक पर्यवसान पर संदेय फायदे, यदि कोई हों, और निम्नलिखित, यदि कोई हों:-

(i) आधारभूत फायदे,

(ii) ऊपरी फायदे,

(iii) ऐसा बोनस जो पहले ही मूल्यांकन तारीख को निहित हो चुका है,

(iv) मूल्यांकन तारीख को मूल्यांकन के परिणामस्वरूप बोनस, और

(v) भावी बोनस (मूल्यांकन तारीख के एक वर्ष पश्चात्), इसमें सेवांत बोनस (मूल्यांकन ब्याज दर के साथ संगत) भी सम्मिलित है;

(ख) किसी पालिसी की बाबत संदेय कमीशन और पारिश्रमिक, यदि कोई हो (यह बीमाकर्ता की चालू परिपाटी पर आधारित होगा)। छोड़ दी गई पालिसियों की बाबत कमीशन का संदाय न होने पर कोई भत्ता नहीं दिया जाएगा;

(ग) किसी पालिसी की बाबत पैरा 5 के उपपैरा (4) में यथाउपबंधित पालिसी अनुरक्षण खर्च;

(छ) जहां शेयरधारकों के लिए माने जा सकने वाले लाभ और पालिसीधारकों के लिए बोधित बोनस दरों के बीच विनिर्दिष्ट संबंध है, वहां शेयरधारकों को लाभ का आबंटन, यदि कोई हो:

परंतु यह कि भत्ता कर, यदि कोई हो, के लिए किया जाना चाहिए।

4. पालिसी विकल्प - जहां पालिसी में, पालिसीधारक के प्रयोग के लिए, भावी तारीख (तारीखों) पर अच्छे स्वास्थ्य के प्रमाण के बिना कवर में संपरिवर्तन या वृद्धि, संविदा की परिपक्वता पर वार्षिकी दर प्रत्याभूति जैसे विकल्प उपलब्ध हैं, वहां ऐसे विकल्पों की लागत प्राक्कलित की जाएगी और इसे गणितीय आरक्षिती की गणना में विशेष नकदी प्रवाह के रूप में माना जाएगा।

5. मूल्यांकन पैरामीटर (1) मूल्यांकन पैरामीटर ऐसे आधार बनाएंगे जिन पर भावी पालिसी नकदी के प्रवाह की गणना की जाएगी और उस पर बढ़ा दिया जाएगा। प्रत्येक पैरामीटर मूल्यांकित किए जाने वाले कारबार के ब्लॉक समुचित होंगे। कोई नियुक्त बीमांकक निम्नलिखित पर विचार करेगा-

(क) पैरामीटर का मूल्य बीमाकर्ता के अनुभव अध्ययन, यदि कोई हो, पर आधारित होगा। यदि विश्वसनीय अनुभव अध्ययन उपलब्ध नहीं है, तो मूल्य उद्योग अध्ययन पर, यदि उपलब्ध और समुचित हो, आधारित हो सकता

है। यदि दोनों में से कोई भी उपलब्ध नहीं है तो मूल्य, उत्पादों की कीमत लगाने के आधारों पर आधारित हो सकेगा। किसी पैरामीटर के प्रत्याशित स्तर की स्थापना में, अनुभव में संभावित किसी क्षय को गणना में लिया जाएगा;

(ख) इस उपपैरा के खंड (क) में यथा अवधारित प्रत्याशित स्तर को प्रतिकूल विचलन के लिए समुचित अंतर (एम ए डी) द्वारा समायोजित किया जाएगा, जहां एम ए डी का स्तर, प्रत्याशित स्तर में विश्वास की डिग्री पर निर्भर है और प्रत्येक पैरामीटर में ऐसा एम ए डी, भारतीय बीमांकन सोसायटी द्वारा प्राधिकरण की सहमति से जारी मार्गदर्शन टिप्पणों पर आधारित होगा।

(ग) विभिन्न मूल्यांकन पैरामीटरों के लिए प्रयुक्त मूल्य एक दूसरे से संगत होने चाहिए।

(2) प्रयोग की जाने वाली मरण सारणी दर, तब तक प्रकाशित सारणी के प्रतिनिर्देश में होगी, जब तक कि बीमाकर्ता ने अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर एक पृथक् सारणी न बना ली हो:

परंतु यह कि ऐसी प्रकाशित सारणी, भारतीय बीमांकन सोसायटी द्वारा प्राधिकरण की सहमति से बीमा उद्योग को उपलब्ध कराई जाएगी:

परंतु यह और कि प्रकाशित सारणी के प्रति निर्देश में अवधारित ऐसी दरें, उस प्रकाशित सारणी के शत प्रतिशत से कम नहीं होंगी:

परंतु यह और कि प्रकाशित सारणी के प्रति निर्देश में अवधारित ऐसी दरें, उस प्रकाशित सारणी के शत प्रतिशत से कम हो सकेंगी, यदि नियुक्त बीमांकक निम्न प्रतिशत को न्यायोचित ठहरा सकता है।

(3) प्रयोग की जाने वाली मोरबीडिटी दर, तब तक प्रकाशित सारणी के प्रतिनिर्देश में होगी, जब तक कि बीमाकर्ता ने अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर, एक पृथक् सारणी न बना ली हो:

परंतु यह कि ऐसी प्रकाशित सारणी, भारतीय बीमांकक सोसायटी द्वारा, प्राधिकरण की सहमति से बीमा उद्योग को उपलब्ध कराई जाएगी:

परंतु यह और कि प्रकाशित सारणी के प्रतिनिर्देश में अवधारित ऐसी दरें, उस प्रकाशित सारणी के शत प्रतिशत से कम नहीं होंगी:

परंतु यह और कि प्रकाशित सारणी के प्रतिनिर्देश में अवधारित ऐसी दरें, उस प्रकाशित सारणी के शत प्रतिशत से कम हो सकेंगी, यदि नियुक्त बीमांकक कम प्रतिशत को न्यायोचित ठहरा सकता है:

(4) पालिसी अनुरक्षण खर्च उस रीति पर निर्भर करेंगे, जिसमें बीमाकर्ता द्वारा उनका विश्लेषण किया जाता है अर्थात् नियत खर्च और विविध खर्च। विविध खर्च बीमा की गई राशि प्रीमियमों या फायदों से संबद्ध हो सकेंगे। नियत खर्च बीमा की गई राशि या प्रीमियम या फायदों से संबद्ध हो सकेंगे या पालिसी के अनुसार हो सकेंगे। भावी वर्षों में मुद्रास्फीति के लिए सभी खर्चों में वृद्धि की जाएगी, ली गई मुद्रास्फीति की दर, ब्याज की मूल्यांकन दर से संगत होनी चाहिए।

(5) नियुक्त बीमांकन द्वारा प्रयोग की जाने वाली ब्याज की मूल्यांकन दर—

(क) जीवन बीमा कारबार के ब्लॉकों के लिए माने जा सकने वाली विद्यमान आस्तियों की प्राप्ति के और उस प्राप्ति के, जिसकी बीमाकर्ता को भविष्य में निवेश की गई राशियों से प्राप्त होने की संभावना है, प्रज्ञापूर्ण निर्धारण से अवधारित पैरा 4 में विनिर्दिष्ट पालिसी नकदी के प्रवाह के वर्तमान मूल्य की संगणना के लिए ब्याज दर से अधिक नहीं होगी और ऐसा निर्धारण निम्नलिखित को संगणना में लेगा—

(i) दायित्वों का समर्थन करने वाली आस्तियों की संरचना, किए गए निवेशों से सम्भावित नकदी का प्रवाह, मूल्यांकित किए जाने वाली पालिसियों के ब्लॉक से होने वाला नकदी का प्रवाह, सम्भावित भावी निवेशों की परिस्थितियां और भावी शुद्ध नकदी के प्रवाह की बाबत नियोजित की जाने वाली पुनर्निवेश और विनिवेश युक्तियां;

(ii) ऐसे निवेश पर आमदनी की प्राप्ति के सम्बन्ध में निवेश या मूलधन के पुनःसंदाय से जुड़े जोखिम;

(iii) बीमाकर्ता के निवेश कृत्यों से जुड़े खर्च;

(ख) किसी विशिष्ट प्रवर्ग की संविदाओं की बाबत पालिसी नकदी के प्रवाह के वर्तमान मूल्य की संगणना के लिए, ऐसी संविदाओं के प्रवर्ग के प्रयोजन के लिए अनुरक्षित आस्तियों पर प्राप्तिओं से अधिक नहीं होगी;

(ग) भाग न लेने वाले कारबार की बाबत, भावी ब्याज दरों में कमी के जोखिम को मान्यता प्रदान करेगी;

(घ) भाग लेने वाले कारबार की बाबत, ऐसी धारणा (भावी निवेश परिस्थितियों के सम्बन्ध में) पर की मूल्यांकन में प्रयुक्त भावी बोनस का मान, मूल्यांकन ब्याज दर से संगत होगा, आधारित होगी, और

(ङ) एकल प्रीमियम की बाबत, जोखिम मुक्त ब्याज दरों में परिवर्तन के प्रभाव को गणना में लेगी।

(6) पालिसी के प्रकार पर निर्भर करते हुए, अन्य पैरामीटरों को भी गणना में लिया जाएगा। ऐसे पैरामीटरों के मूल्यों की स्थापना में, इस अनुसूची में नियत बातों को गणना में लिया जाएगा।

6. पुनर्बीमा करने के लिए लागू होना- (1) यह अनुसूची पुनः बीमाकर्ता की पुस्तक में कारबार के मूल्यांकन को भी लागू होगी।

(2) बीमाकर्ता द्वारा अभ्यर्पित कारबार के संबंध में, यह अनुसूची, बीमाकर्ता द्वारा प्रतिधारित ऐसी शुद्ध रकमों को भी लागू होगी जिन्हें जोखिम है।

(3) प्राधिकारी के पूर्ण अनुमोदन के बिना, निक्षेप या बीमाकर्ता के पुनर्बीमाकर्ताओं से किसी प्रकार के ऋण के रूप में किसी उधार के साथ पुनर्बीमा प्रबंध को, अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन के अवधारण के प्रयोजन के लिए पुनर्बीमा के लिए ऋण के रूप में माना जाएगा।

7. संबद्ध कारबार के लिए अतिरिक्त अपेक्षाएं- (1) संबद्ध कारबार के संबंध में आरक्षिती में, यूनिट आरक्षियों और साधारण निधि आरक्षितियां नामक दो संघटक होंगे।

(2) यूनिट आरक्षितियों की, मूल्यांकन तारीख को यूनिट मूल्यों का प्रयोग करके मूल्यांकन तारीख को प्रवृत्त पालिसियों को आबंटित यूनिटों के सम्बद्ध में गणना की जाएगी।

(3) साधारण निधि आरक्षितियों (यूनिटेतर आरक्षितियों) को इस अनुसूची में दी गई पूर्वोक्त मूल्यांकन पद्धति का प्रयोग करे, अवधारित किया जाएगा, जो निम्नलिखित को गणना में लेगी, अर्थात्:-

(क) भविष्य में संदेय प्रीमियम, यदि कोई हो;

(ख) साधारण निधि द्वारा उपलब्ध कराए गए मृत्यु फायदे (यूनिटों के मूल्य से अधिक), यदि कोई हो;

(ग) साधारण निधि को संदत्त प्रबंधन प्रभार;

(घ) अभ्यर्पण मूल्यों या न्यूनतम मृत्यु और परिपक्वता फायदों से सम्बन्धित प्रत्याभूतियां, यदि कोई हों;

(ड) निधि वृद्धि दर ओर प्रबन्धन प्रभार। (इन पैरामीटरों के मूल्य, अन्यो के साथ पैरा 5 के अनुसार, अवधारित किए जाएंगे);

(च) ऋणात्मक आरक्षितियों को, यदि कोई हो, पैरा 2 के उपपैरा (5) के अनुसार, बरता जाएगा।

8. उपबन्धों के लिए अतिरिक्त अपेक्षाएं—नियुक्त बीमांकक, गणितीय आरक्षितियों के अवधारण में, जहां प्रत्येक पालिसी के लिए गणितीय आरक्षितियां संगणित करना संभव नहीं है, वहां निम्नलिखित की बाबत संकलित उपबन्ध बनाएगा:-

(क) ऐसी पालिसियां जिनकी बाबत, ऐसे औसत से कम जीवन वालों के निम्नांकन के कारण अतिरिक्त प्रीमियम प्रभारित किया गया है, जो व्यावसायिक परिसंकटों, अधिक भार, कम भार, धूम्रपान, स्वास्थ्य, जलवायु या भौगोलिक परिस्थितियों जैसे अतिरिक्त जोखिमों के अधीन रहते हुए हैं;

(ख) मूल्यांकन के लिए सम्मिलित नहीं की गई व्ययगत पालिसियां, किन्तु जिनके अधीन दायित्व विद्यमान हैं या उद्भूत हो सकेंगे;

(ग) एकल और सामूहिक बीमा पालिसियों के अधीन उपलब्ध विकल्प;

(घ) एकल और सामूहिक बीमा पालिसियों को उपलब्ध प्रत्याभूतियां;

(ङ) ऐसी विनिमय दर, जिस पर विदेशी मुद्रा में जारी पालिसियों के संबंध में फायदे भारतीय रुपए में संपरिवर्तित किए गए हैं और विनिमय दरों में भावी परिवर्तनों से उद्भूत होने वाले गणितीय आरक्षितियों में संभावित वृद्धि के लिए क्या उपबंध किए गए हैं;

(च) अन्य, यदि कोई हों।

9. दायित्वों का विवरण— बीमाकर्ता, बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमांकिक रिपोर्ट और संक्षिप्त) विनियम, 2000 के अनुसार, दायित्वों का विवरण प्रस्तुत करेगा।

अनुसूची 2ख

(विनियम 4 देखिए)

दायित्वों का मूल्यांकन (साधारण बीमा)

1. निर्वाचन - इस अनुसूची में,-

(क) "उपगत, किन्तु रिपोर्ट नहीं किए गए दावों के लिए आरक्षिती (आई बी एन आर)" से ऐसे दावों के लिए आरक्षिती अभिप्रेत है, जिन्हें तुल्यपत्र की तारीख को उपगत किया गया है किन्तु रिपोर्ट नहीं किया गया और इसमें ऐसे दावों के लिए आरक्षिती सम्मिलित है, जो अपर्याप्त रूप से आरक्षित हैं;

(ख) "बकाया दावों के लिए आरक्षिती" से इस अनुसूची के पैरा 2(i)(ख)(iii) में यथावर्णित बकाया दावों के लिए आरक्षिती अभिप्रेत है;

1983GL/10000...9

2. दायित्वों का अवधारण - (1) कोई बीमाकर्ता-

(i) निम्नलिखित पदों के संबंध में उचित मूल्य रखेगा, अर्थात्:-

- (i) डूबंत और शंकास्पद ऋणों के लिए उपबंध
- (ii) घोषित या सिफरिश किए गए भागदेय के लिए आरक्षिती और संपूर्ण बकाया भागदेय;
- (iii) बीमा कारबार चलाने वाली कंपनी को देय संपूर्ण रकम;
- (iv) विविध लेनदारों को देय संपूर्ण रकम;
- (v) संपूर्ण कर लगाने के लिए उपबंध, और
- (vi) विदेशी मुद्रा आरक्षिती।

(ii) निम्नलिखित आरक्षितियों की रकम का, इसमें नीचे प्रत्येक आरक्षिती के लिए विनिर्दिष्ट रीति में अवधारण:-

(क) अपर्यवसित जोखिमों के लिए निम्नलिखित की बाबत आरक्षिती,-

(i) अग्नि कारबार, के लिए पूर्ववर्ती बारह मासों के दौरान प्राप्त या प्राप्त करने योग्य प्रीमियम, पुनर्बीमाओं के शुद्ध का 50 प्रतिशत;

(ii) प्रकीर्ण कारबार के लिए पूर्ववर्ती बारह मासों के दौरान प्राप्त या प्राप्त करने योग्य प्रीमियम, पुनर्बीमाओं के शुद्ध का 50 प्रतिशत;

(iii) समुद्री हल कारबार से अन्य समुद्री कारबार के लिए पूर्ववर्ती बारह मासों के दौरान प्राप्त या प्राप्त करने योग्य प्रीमियम, पुनर्बीमाओं के शुद्ध का 50 प्रतिशत;

(iv) समुद्री हल कारबार के लिए पूर्ववर्ती बारह मासों के दौरान प्राप्त या प्राप्त करने योग्य प्रीमियम, पुनर्बीमाओं के शुद्ध का 100 प्रतिशत;

(ख) बकाया दावों के लिए आरक्षिती निम्नलिखित रीति में अवधारित की जाएगी:-

(i) जहां बीमाकर्ताओं के बकाया दावों की रकम ज्ञात है, वहां संपूर्ण रकम दी जाएगी;

(ii) जहां बीमाकर्ता के अनुसार, बकाया दावों की रकम युक्तिबुक्ति रूप में प्राक्कलित की जा सकती है, वहां वह समझौता पैटर्न या औसत दावा रकम रखें और मुद्रास्फीति में परिवर्तनों के लिए सुस्पष्ट भत्तों को गणना में लेने के पश्चात् "मामल दर मामल पद्धति" अपना सकेगा;

(ग) उपगत किन्तु रिपोर्ट नहीं किए गए दावों के लिए आरक्षिती (आई बी एन आर) बीमांकन सिद्धांतों का प्रयोग करके अवधारित की जाएगी। ऐसे अवधारण में निम्नलिखित बीमांकक, भारतीय बीमांकिक सोसायटी द्वारा प्राधिकरण की सहमति से जारी मार्गदर्शक टिप्पणों और प्राधिकरण द्वारा इस निमित्त जारी किन्ही निदेशों को अपनाएगा।

3. दायित्व का विवरण- प्रत्येक साधारण बीमाकर्ता अधिनियम की धारा 64फ के अनुसार, प्राधिकरण द्वारा अनुमोदित लेखा परीक्षक द्वारा प्रमाणित दायित्वों का विवरण प्ररूप जख में तैयार करेगा, जो आई बी एन आर आरक्षिती की बाबत इसके नियुक्त बीमांकक द्वारा भी प्रमाणित होगा। विवरण प्राधिकारी को अधिनियम की धारा 15 में वर्णित विवरणी के साथ प्रस्तुत किया जाएगा।

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि उपयुक्त विवरण बीमाकर्ता के ऐसे दायित्वों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमाकर्ताओं की आस्तियां, दायित्व और ऋण शोधन क्षमता मार्जिन) विनियम, 2000 में विहित रीति में अवधारित किया गया है और ऐसे दायित्वों की रकम उचित और युक्तियुक्त है। मैं यह और प्रमाणित करता हूँ कि उपर्युक्त

विवरण में ऐसी आई बी एन आर आरक्षितियों सम्मिलित हैं, जिन्हें नियत बीमांकक द्वारा अवधारित किया गया है और इसमें नीचे उसका प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया गया है।

अर्हताएं, यदि कोई हों (दायित्वों के अवधारण के संबंध में)

स्थान:

तारीख:

लेखापरीक्षक का नाम और हस्ताक्षर

नियत बीमांकक से प्रमाणीकरण

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण में आई बी एन आर आरक्षितियाँ, मेरी राय में सही और उचित रकम प्रस्तुत करती हैं।

अर्हताएं, यदि कोई हों (आई बी एन आर आरक्षितियों के अवधारण के संबंध में)

स्थान :

तारीख:

नियत बीमांकक का नाम और हस्ताक्षर

अनुसूची 3क

(विनियम 5 देखिए)

1. निर्वचन - इस अनुसूची में-

(क) "उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन" से आस्तियों के मूल्य (प्ररूप बी वि वि प्रा आस्तियां कक में प्रस्तुत) में, जीवन बीमा दायित्वों के मूल्य (बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमांकिक रिपोर्ट और संक्षिप्त) विनियम, 2000 के विनियम 4 में यथाविनिर्दिष्ट प्ररूप ज में प्रस्तुत) और पालिसीधारकों की निधि और शेयरधारकों की निधियों के अन्य दायित्वों से आधिक्य अभिप्रेत है;

(ख) "शोधन क्षमता अनुपात" से उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन की रकम का अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन की रकम से अनुपात अभिप्रेत है।

1. ऋण शोधन क्षमता मार्जिन का अवधारण - प्रत्येक बीमाकर्ता, बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमांकिक रिपोर्ट और संक्षिप्त) विनियम, 2000 में यथा विनिर्दिष्ट प्ररूप ट में अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन, उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन और ऋण शोधन क्षमता अनुपात का अवधारण करेगा।

अनुसूची 3ख

(धारा 5 देखिए)

ऋण शोधन क्षमता मार्जिन का अवधारण - साधारण बीमाकर्ता

1. निर्वचन - इस अनुसूची में,-

(क) "उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन" से आस्तियों के मूल्य (प्ररूप बी. वि वि प्रा - आस्तियां कक में प्रस्तुत) में, प्ररूप टछ की सारणी 3 में यथादर्शित और समायोजनों के साथ दायित्वों के मूल्य (प्ररूप जछ में प्रस्तुत) से आधिक्य अभिप्रेत है।

(ख) "ऋण शोधन क्षमता अनुपात" से उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन की रकम का अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन की रकम से अनुपात अभिप्रेत है।

2. ऋण शोधन क्षमता मार्जिन का अवधारण — प्रत्येक बीमाकर्ता, प्ररूप टछ में अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन, उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन और ऋण शोधन क्षमता अनुपात का अवधारण करेगा।

प्ररूप टछ

(विनियम 5 देखिए)

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (बीमाकर्ताओं की आस्तियां, दायित्व और ःरण शोधन क्षमता मार्जिन) विनियम, 2000

सारणी 1 - ःरण शोधन क्षमता मार्जिन का विवरण : (साधारण बीमाकर्ता)

31 मार्च, 20... का

प्ररूप कोड : [] [] [] [] [] [] [] []

बीमाकर्ता का नाम:	रजिस्ट्रीकरण संख्यांक:	रजिस्ट्रीकरण की तारीख: _____
वर्गीकरण: भारत के भीतर कारबार/कुल कारबार	वर्गीकरण कोड: []	

सारणी 1 - शुद्ध प्रीमियम और शुद्ध उपगत दावों पर आधारित अपेक्षित ःरण शोधन क्षमता मार्जिन (लख रु में)

मद सं	वर्णन (कारबार का वर्ग)	सकल प्रीमियम	शुद्ध प्रीमियम	सकल उपगत दावे	शुद्ध उपगत दावे	आर एस एम-1	आर एस एम-2	आर एस एम
1	2	3	4	5	6	7	8	9
01	अग्नि समुद्री:							
02	समुद्री स्थोरा							
03	समुद्री हल प्रकीर्ण:							
04	मोटर							
05	इंजीनियरिंग							
06	विमानन							
07	दायित्व							
08	ग्रामीण बीमा							
09	अन्य							
10	स्वास्थ्य बीमा							
12	कुल							

टिप्पण: (1) ऊपर सारणी में आर एस एम-1 से शुद्ध प्रीमियमों पर आधारित अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन अभिप्रेत है और इससे ऐसी रकम के बीस प्रतिशत के रूप में अवधारित किया जाएगा, जो नीचे यथाविनिर्दिष्ट घटक क से गुणित सकल प्रीमियमों और शुद्ध प्रीमियों में से उच्चतर है।

(2) ऊपर सारणी में आर एस एम-2 से शुद्ध उपगत दावों पर आधारित अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन अभिप्रेत है और इसे ऐसी रकम के तीस प्रतिशत के रूप में अवधारित किया जाएगा, जो नीचे यथा विनिर्दिष्ट घटक ख से गुणित सकल शुद्ध उपगत दावों और शुद्ध उपगत दावों में से उच्चतर है:

मद सं०	वर्णन (कारबार का वर्ग)	क	ख
(1)	(2)	(3)	(4)
01	अग्नि समुद्री:	0.5	0.5
02	समुद्री स्थोरा	0.7	0.7
03	समुद्री हल प्रकीर्ण:	0.5	0.5
04	मोटर	0.85	0.85
05	इंजीनियरिंग	0.5	0.5
06	विमानन	0.9	0.9
07	दायित्व	0.85	0.85
08	ग्रामीण बीमा	0.5	0.5
09	अन्य	0.7	0.7
10	स्वास्थ्य बीमा	0.85	0.85

(3) आर एस एम से अपेक्षित ऋण शोधन क्षमता मार्जिन अभिप्रेत है और जो आर एस एम-1 और आर एस एम-2 की रकमों में से उच्चतर होगा।

सारणी 2 - उपलब्ध ऋण शोधन क्षमता मार्जिन और ऋण शोधन क्षमता अनुपात

मद सं०	वर्णन	टिप्पण संख्यांक	रकम
1	2	3	4
01	पालिसीधारकों की निधि में उपलब्ध आस्तियां		
	घटाइए:		
02	दायित्व		
03	अन्य दायित्व		
04	पालिसीधारकों की निधि में आधिक्य: (01-02-03)		
05	शेयरधारकों की निधि में उपलब्ध आस्तियां		
	घटाइए:		
06	अन्य दायित्व		
07	शेयरधारकों की निधि में आधिक्य: (05-06)		
08	कुल ए से एम (04+07)		
09	कुल आर एस एम		
10	शोधन क्षमता अनुपात (कुल ए एस एम/कुल आर एस एम)		

प्रमाणीकरण:

मैं, लेखापरीक्षक, यह प्रमाणित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण, बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 64फक के अनुसार, तैयार किया गया है, और इसमें वर्णित रकमें मेरी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार सही हैं।

स्थान:

लेखापरीक्षक का नाम और हस्ताक्षर

तारीख:

प्रतिहस्ताक्षर:

मुख्य अधिकारी

टिप्पण:

1. मद सं० 01, प्ररूप बी वि वि प्रा-आस्तियां-कक में यथावर्णित पालिसीधारकों की निधि की बाबत आस्तियों के समायोजित मूल्य की रकम होगी।

2. मद सं० 02, प्ररूप जछ में यथावर्णित कुल दायित्वों की रकम होगी।
3. मद सं० 03, पालिसीधारकों की निधि की बाबत उद्भूत होने वाले अन्य दायित्वों की और तुलनपत्र में यथावर्णित रकम होगी।
4. मद सं० 05, प्ररूप बी वि वि प्रा-आस्तियां-कक में यथा वर्णित शेयरधारकों की निधि की बाबत कुल आस्तियों की रकम होगी।
5. मद सं० 06, शेयरधारकों की निधियों की बाबत उद्भूत होने वाले अन्य दायित्वों की रकम होगी, जो तुलनपत्र में यथावर्णित है।

एन. रंगाचारी, अध्यक्ष

[सं. विज्ञापन-3/4/असाधारण/161/2000]

INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY NOTIFICATION

New Delhi, the 14th July, 2000

**Insurance Regulatory and Development Authority (Assets, Liabilities, and Solvency Margin of Insurers)
Regulations, 2000.**

F.No. IRDA/Reg/7/2000.—

In exercise of the powers conferred by clauses (y), (z) and (za) of sub-section (2) of section 114A of the Insurance Act, 1938, (4 of 1938), read with section 26 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), the Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee, hereby makes the following regulations, namely:-

1.Short title and commencement.---(1) These regulations may be called the Insurance Regulatory and Development Authority (Assets, Liabilities, and Solvency Margin of Insurers) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.---(1) In these regulations, unless the context otherwise requires ----

(a) "Act" means the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(b) "Authority" means the Insurance Regulatory and Development Authority established under sub-section (1) of section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999);

(2) All words and expressions used herein and not defined but defined in the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), or in the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), or in any Rules or Regulations made thereunder, shall have the meanings respectively assigned to them in those Acts or Rules or Regulations.

3. Valuation of Assets.--Every insurer shall prepare a statement of the value of assets in Form IRDA- Assets- AA in accordance with Schedule I.

198362/2000-3

4. Determination of Amount of Liabilities.—Every insurer shall prepare a statement of the amount of liabilities in accordance with Schedule II-A, in respect of life insurance business, and in Form HG in accordance with Schedule II-B, in respect of general insurance business, as the case may be.

5. Determination of Solvency Margin.—Every insurer shall prepare a statement of solvency margin in accordance with Schedule III-A, in respect of life insurance business, and in Form KG in accordance with Schedule III-B, in respect of general insurance business, as the case may be.

6. Health Insurance Business. -- Where the insurer transacts health insurance business, providing health covers, the amount of liabilities shall be determined in accordance with the principles specified under these Regulations.

7. Business outside India.-- Where the insurer transacts insurance business in a country outside India, and submits statements or returns or any such particulars to a public authority of that country, he shall enclose the same along with the Forms specified in accordance with these Regulations and the Insurance Regulatory and Development Authority (Actuarial Report and Abstract) Regulations, 2000.

Provided that if the appointed actuary is of the opinion that it is necessary to set additional reserves over and above the reserves shown in the statements or returns or any such particulars submitted to the public authority of a country outside India, he may set such additional reserves.

8. Furnishing of Forms.--- The Forms, namely, Form IRDA- Assets- AA , Form HG, and Form KG, shall be furnished separately for Business within India and Total Business transacted by the insurer.

9. Personal visit of appointed actuary to the Authority.— The Authority may, if considered necessary and expedient, ask the appointed actuary to make a personal visit to the office of the Authority to elicit from him any further information.

Schedule I**VALUATION OF ASSETS**

(see Regulation 3)

1. Interpretation. In this Schedule, unless the context otherwise requires, 'non-mandated investments' means those investments that are neither approved securities nor approved investments.

2. Values of Assets.—(1) The following assets should be placed with value zero,--

- (a) Agent's balances and outstanding premiums in India, to the extent they are not realised within a period of thirty days;
- (b) Agents' balances and outstanding premiums outside India, to the extent they are not realisable ;
- (c) Sundry debts, to the extent they are not realisable;
- (d) Advances of an unrealisable character;
- (e) Furniture, fixtures, dead stock and stationery;
- (f) Deferred expenses;
- (g) Profit and loss appropriation account balance and any fictitious assets other than pre-paid expenses;
- (h) Reinsurer's balances outstanding for more than three months;
- (i) Preliminary expenses in the formation of the company;

(2) The value of computer equipment including software shall be computed as under:--

- (i) seventy five per cent. of its cost in the year of purchase;
- (ii) fifty per cent. of its cost in the second year;
- (iii) twenty-five per cent. of its cost in the third year; and
- (iv) zero per cent. thereafter.

(3) All other assets of an insurer have to be valued in accordance with the Insurance Regulatory and Development Authority (Preparation of Financial Statements and Auditor's Report of Insurance Companies) Regulations, 2000.

3. Statement of Assets.--Every insurer shall prepare a statement of assets in Form IRDA-Assets- AA.

(See Regulation 3)

Statement of Assets as at 31st March, 20

Form Code: [][][][][][][][][][]

Name of Insurer: _____ **Registration Number:** _____ **Date of registration:** _____

Classification: Business Within India/ Total Business

Item No. (1)	Category of Asset (2)	Policyholders' funds: Amount (in rupees lakhs) as per (a) below (3)	Shareholders' funds: Amount (in rupees lakhs) as per (a) below (4)
01	Approved Securities		
02	Approved Investments		
03	Deposits		
04	Non-Mandated Investments		
05	Other Assets, specify		
06	Total		
07	Fair Value Change Account		
08	Adjusted Value of Assets: (6) - (7)		

I certify that the statement has been prepared in accordance with Schedule I.

Name and Signature of Appointed Actuary.
(in case of a life insurer)

/ Name and Signature of Auditor
(in case of a general insurer)

Notes: The statement shall show the value of the above-mentioned categories of assets in accordance with Regulation 2 in Schedule I.

Schedule II-A

Valuation of Liabilities - Life Insurance

(See Regulation 4)

1. Interpretation.—In this Schedule, --

- (a) “valuation date”, in relation to an actuarial investigation, means the date to which the investigation relates.
- (b) “universal life contracts” means those contracts that are presented in an unbundled form. The contracts where policyholders have an option to invest in units of insurer’s segregated fund(s) shall be treated as “linked business”; and others shall be treated as “non-linked business”.
- (c) “segregated funds” means funds earmarked in respect of linked business.

2. Method of Determination of Mathematical Reserves.—(1) Mathematical Reserves shall be determined separately for each contract by a prospective method of valuation in accordance with sub-paras (2) to (4)..

- (2) The valuation method shall take into account all prospective contingencies under which any premiums (by the policyholder) or benefits (to the policyholder/beneficiary) may be payable under the policy, as determined by the policy conditions. The level of benefits shall take into account the reasonable expectations of policyholders (with regard to bonuses, including terminal bonuses, if any) and any established practices of an insurer for payment of benefits.
- (3) The valuation method shall take into account the cost of any options that may be available to the policyholder under the terms of the contract.
- (4) The determination of the amount of liability under each policy shall be based on prudent assumptions of all relevant parameters. The value of each such parameter shall be based on the insurer’s expected experience and shall include an appropriate margin for adverse deviations (hereinafter referred to as MAD) that may result in an increase in the amount of mathematical reserves.
- (5) (i) The amount of mathematical reserve in respect of a policy, determined in accordance with sub-para (4), may be negative (called “negative reserves”) or less than the guaranteed surrender value available (called “guaranteed surrender value deficiency reserves”) at the valuation date.
 (ii) The appointed actuary shall, for the purpose of section 35 of the Act, use the amount of such mathematical reserves without any modification;
 (iii) The appointed actuary shall, for the purpose of sections 13, 49, 64V and 64VA of the Act, set the amount of such mathematical reserve to zero, in case of such negative reserve, or to the guaranteed surrender value, in case of such guaranteed surrender value deficiency reserves, as the case may be.
- (6) The valuation method shall be called “Gross Premium Method”.
- (7) If in the opinion of the appointed actuary, a method of valuation other than the Gross Premium Method of valuation is to be adopted, then, other approximations (e.g. retrospective method) may be used.

Provided that the amount of calculated reserve is expected to be atleast equal to the amount that shall be produced by the application of Gross Premium Method.

- (8) The method of calculation of the amount of liabilities and the assumptions for the valuation parameters shall not be subject to arbitrary discontinuities from one year to the next.

- (9) The determination of the amount of mathematical reserves shall take into account the nature and term of the assets representing those liabilities and the value placed upon them and shall include prudent provision against the effects of possible future changes in the value of assets on the ability of the insurer to meet its obligations arising under policies as they arise.

3. Policy Cash Flows.--- The gross premium method of valuation shall discount the following future policy cash flows at an appropriate rate of interest,---

- (a) premiums payable, if any, benefits payable, if any, on death; benefits payable, if any, on survival; benefits payable, if any, on voluntary termination of contract, and the following, if any, :-
- (i) basic benefits,
 - (ii) rider benefits,
 - (iii) bonuses that have already been vested as at the valuation date,
 - (iv) bonuses as a result of the valuation at the valuation date, and
 - (v) future bonuses (one year after valuation date) including terminal bonuses (consistent with the valuation rate of interest);
- (b) commission and remuneration payable, if any, in respect of a policy (This shall be based on the current practice of the insurer). No allowance shall be made for non-payment of commissions in respect of the orphaned policies;
- (c) policy maintenance expenses, if any, in respect of a policy, as provided under sub-para (4) of para 5;
- (d) allocation of profit to shareholders, if any, where there is a specified relationship between profits attributable to shareholders and the bonus rates declared for policyholders.

Provided that allowance must be made for tax, if any.

4. Policy Options.—Where a policy provides built-in options, that may be exercised by the policyholder, such as conversion or addition of coverage at future date(s) without any evidence of good health, annuity rate guarantees at maturity of contract, etc., the costs of such options shall be estimated and treated as special cash flows in calculating the mathematical reserves.

5. Valuation Parameters.—(1) The valuation parameters shall constitute the bases on which the future policy cash flows shall be computed and discounted. Each parameter shall have to be appropriate to the block of business to be valued. An appointed actuary shall take into consideration the following,--

(a) The value(s) of the parameter shall be based on the insurer's experience study, where available. If reliable experience study is not available, the value(s) can be based on the industry study, if available and appropriate. If neither is available, the values may be based on the bases used for pricing the product. In establishing the expected level of any parameter, any likely deterioration in the experience shall be taken into account;

(b) The expected level, as determined in clause (a) of this sub-para, shall be adjusted by an appropriate Margin for Adverse Deviations (MAD), the level of MAD being dependent on the degree of confidence in the expected level, and such MAD in each parameter shall be based on the Guidance Notes issued by the Actuarial Society of India, with the concurrence of the Authority

(c) The values used for the various valuation parameters should be consistent among themselves.

(2) **Mortality rates** to be used shall be by reference to a published table, unless the insurer has constructed a separate table based on his own experience:

Provided that such published table shall be made available to the insurance industry by the Actuarial Society of India, with the concurrence of the Authority.

Provided further that such rates determined by reference to a published table shall not be less than hundred per cent. of that published table.

Provided further that such rates determined by reference to a published table may be less than hundred per cent. of that published table if the appointed actuary can justify a lower per cent.

(3) **Morbidity rates** to be used shall be by reference to a published table, unless the insurer has constructed a separate table based on his own experience:

Provided that such published table shall be made available to the insurance industry by the Actuarial Society of India, with the concurrence of the Authority:

Provided further that such rates determined by reference to a published table shall not be less than hundred per cent. of that published table.

Provided further that such rates determined by reference to a published table may be less than hundred per cent. of that published table if the appointed actuary can justify a lower per cent.

(4) **Policy maintenance expenses** shall depend on the manner, in which they are analysed by the insurer, viz., fixed expenses and variable expenses. The variable expenses shall be related to sum assured or premiums or benefits. The fixed expenses may be related to sum assured or premiums or benefits or per policy expenses. All expenses shall be increased in future years for inflation, the rate of inflation assumed should be consistent with the valuation rate of interest.

(5) **Valuation rates of interest**, to be used by appointed actuary -

(a) shall be not higher than the rates of interest, for the calculation of the present value of policy cash flows referred to in para 4, determined from prudent assessment of the yields from existing assets attributable to blocks of life insurance business, and the yields which the insurer is expected to obtain from the sums invested in the future, and such assessment shall take into account ---

- (i) the composition of assets supporting the liabilities, expected cash flows from the investments on hand, the cash flows from the block of policies to be valued, the likely future investment conditions and the reinvestment and disinvestment strategy to be employed in dealing with the future net cash flows;
- (ii) the risks associated with investment in regard to receipt of income on such investment or repayment of principal;
- (iii) the expenses associated with the investment functions of the insurer;

(b) shall not be higher than, for the calculation of present value of policy cash flows in respect of a particular category of contracts, the yields on assets maintained for the purpose of such category of contracts;

(c) in respect of non-participating business, shall recognise the risk of decline in the future interest rates;

(d) in respect of participating business, shall be based on the assumption (with regard to future investment conditions), that the scale of future bonuses used in the valuation is consistent with the valuation rate of interest, and

(e) in respect of single premium business, shall take into account the effect of changes in the risk-free interest rates.

(6) **Other parameters**, may be taken into account, depending on the type of policy. In establishing the values of such parameters, the considerations set out in this Schedule shall be taken into account.

6. Applicability to Reinsurance.—(1) This Schedule shall also apply to the valuation of business in the books of reinsurers.

- (2) As regards the business ceded by insurers, this Schedule shall be applicable to the net sums at risk retained by the insurer.
- (3) Reinsurance arrangement with an element of borrowing in the form of deposit or credit of any kind from insurer's reinsurers without the prior approval of the Authority shall not be treated as credit for reinsurance for the purpose of determination of required solvency margin.
- 7. Additional Requirements for Linked Business.**—(1) Reserves in respect of linked business shall consist of two components, namely, unit reserves and general fund reserves.
- (2) Unit reserves shall be calculated in respect of the units allocated to the policies in force at the valuation date using unit values at the valuation date.
- (3) General fund reserves (non-unit reserves) shall be determined using a prospective valuation method set out in this Schedule, which shall take into account of the following, namely:-
- (a) premiums, if any, payable in future;
 - (b) death benefits, if any, provided by the general fund (over and above the value of units);
 - (c) management charges paid to the general fund;
 - (d) guarantees, if any, relating to surrender values or minimum death and maturity benefits;
 - (e) fund growth rates and management charges. (The values of these parameters, along with others, shall be determined in accordance with para 5);
 - (f) negative reserves, if any, shall be dealt with in accordance with sub-para (5) of para 2
- 8. Additional Requirements for Provisions.**— The appointed actuary shall make aggregate provisions in respect of the following, where it is not possible to calculate mathematical reserves for each policy, in the determination of mathematical reserves:-
- (a) Policies in respect of which extra premiums have been charged on account of underwriting of under-average lives that are subject to extra risks such as occupation hazard, over-weight, under-weight, smoking history, health, climatic or geographical conditions;
 - (b) Lapses policies not included in the valuation but under which a liability exists or may arise;
 - (c) Options available under individual and group insurance policies;
 - (d) Guarantees available to individual and group insurance policies;
 - (e) The rates of exchange at which benefits in respect of policies issued in foreign currencies have been converted into Indian Rupees and what provision has been made for possible increase of mathematical reserves arising from future variations in rates of exchange;
 - (f) Other, if any.
- 9. Statement of Liabilities.**— An insurer shall furnish a statement of liabilities in accordance with the Insurance Regulatory and Development Authority (Actuarial Report and Abstract) Regulations, 2000.

Schedule II-B

(See Regulation 4)

Valuation of Liabilities (General Insurance)**1. Interpretation.**—In this schedule,---

- (a) "Reserve for claims incurred but not reported (IBNR)" means the reserve for claims incurred but not reported on the balance sheet date, and includes reserve for claims which may be inadequately reserved;
- (b) "Reserve for outstanding claims" means the reserve for outstanding claims as mentioned in para 2(1)(b)(iii) of this Schedule;

2. Determination of Liabilities.—(1) An insurer shall ---

(i) place a proper value in respect of the following items, namely:-

- (I) provision for bad and doubtful debts,
- (II) reserve for dividends declared or recommended, and outstanding dividends in full,
- (III) amount due to insurance companies carrying on insurance business, in full,
- (IV) amount due to sundry creditors, in full,
- (V) provision for taxation, in full, and
- (VI) foreign exchange reserve.

(ii) determine the amount of following reserves, in the manner specified herein below for each reserve:-

(a) reserve for unexpired risks, shall be, in respect of,---

- (I) Fire business, 50 per cent,
- (II) Miscellaneous business, 50 per cent,
- (III) Marine business other than marine hull business, 50 per cent, and
- (IV) Marine hull business, 100 per cent,

of the premium, net of re-insurances, received or receivable during the preceding twelve months;

(b) reserve for outstanding claims shall be determined in the following manner:-

- (I) where the amounts of outstanding claims of the insurers are known, the amount is to be provided in full;
- (II) where the amounts of outstanding claims can be reasonably estimated according to the insurer, he may follow the 'case by case method' after taking into account the explicit allowance for changes in the settlement pattern or average claim amounts, expenses and inflation.

(c) reserve for claims incurred but not reported (IBNR) shall be determined using actuarial principles. In such determination, the appointed actuary shall follow the Guidance Notes issued by the Actuarial Society of India, with the concurrence of the Authority, and any directions issued by the Authority, in this behalf.

3. Statement of Liability.—Every general insurer shall prepare a statement of liabilities in Form HG, certified by an auditor approved by the Authority in accordance with Section 64V of the Act, and also certified by its appointed actuary in respect of IBNR reserves. The statement shall be furnished to the Authority along with the returns mentioned in section 15 of the Act.

Insurance Regulatory and Development Authority (Assets, Liabilities and Solvency Margin) Regulation, 2000.

Form Code: [][][][][][][][][]

Name of Insurer: Registration Number: Date of registration: _____

Classification: Business Within India/ Total Business

Item No.	Description	Reserves for unexpired risks	Reserve for Outstanding Claims	IBNR Reserves	Total Reserves
(1)	(2).	(3)	(4)	(5)	(6)
01	Fire				
02	Marine <u>Sub class:</u> Marine Cargo Marine Hull				
03	Miscellaneous <u>Sub class:</u> Motor Engineering Aviation Liabilities Rural insurance Others				
04	Health Insurance				
05	Total Liabilities				

Name and Signature of the Appointed Actuary.

Schedule III-A*(See Regulation 5)***DETERMINATION OF SOLVENCY MARGINS—LIFE INSURERS****1. Interpretation.**—In this Schedule—

- (a) 'Available Solvency Margin' means the excess of value of assets (furnished in IRDA- Form- AA) over the value of life insurance liabilities (furnished in Form H as specified in Regulation 4 of Insurance Regulatory and Development Authority (Actuarial Report and Abstract) Regulations, 2000) and other liabilities of policyholders' fund and shareholders' funds;
- (b) "Solvency Ratio" means the ratio of the amount of Available Solvency Margin to the amount of Required Solvency Margin.

2. Determination of Solvency Margin.—Every insurer shall determine the required solvency margin, the available solvency margin, and the solvency ratio in Form K as specified under Insurance Regulatory and Development Authority (Actuarial Report and Abstract), Regulations, 2000.**Schedule III-B***(See Section 5)***DETERMINATION OF SOLVENCY MARGINS—GENERAL INSURERS****1. Interpretation.**—In this Schedule—

- (a) "Available Solvency Margin" means the excess of value of assets (furnished in Form IRDA-Assets- AA) over the value of liabilities (furnished in Form HG), with further adjustments as shown in Table III of Form KG.
- (b) "Solvency Ratio" means the ratio of the amount of Available Solvency Margin to the amount of Required Solvency Margin.

2. Determination of Solvency Margin.—Every insurer shall determine the required solvency margin, the available solvency margin, and the solvency ratio in Form KG.

Form KG
(See Regulation 5)

Notes: (1) RSM-1 in the above table means Required Solvency Margin based on net premiums, and shall be determined as twenty per cent. of the amount which is the higher of the Gross Premiums multiplied by a Factor A as specified below and the Net Premiums.

(2) RSM-2 in the above table means Required Solvency Margin based on net incurred claims, and shall be determined as thirty per cent. of the amount which is the higher of the Gross Net Incurred Claims multiplied by a Factor B as specified below and the Net Incurred Claims.:

Item No	Description (Class of business)	A	B
(1)	(2)	(3)	(4)
01	Fire	0.5	0.5
02	Marine: Marine Cargo	0.7	0.7
03	Marine Hull:	0.5	0.5
04	Miscellaneous: Motor	0.85	0.85
05	Engineering	0.5	0.5
06	Aviation	0.9	0.9
07	Liability	0.85	0.85
08	Rural Insurance	0.5	0.5
09	Others	0.7	0.7
10	Health	0.85	0.85

(3) RSM means Required Solvency Margin and shall be the higher of the amounts of RSM-1 and RSM-2.

TABLE II- AVAILABLE SOLVENCY MARGIN AND-SOLVENCY RATIO

Item	Description	Notes No...	Amount
(1)	(2)	(3)	(4)
01	Available Assets in Policyholders' Funds:		
02	Deduct:		
03	Liabilities		
04	Other Liabilities		
04	Excess in Policyholders' funds (01 - 02 - 03)		
05	Available Assets in Shareholders Funds:		
06	Deduct:		
07	Other Liabilities		
07	Excess in Shareholders' funds: (05 -06)		
08	Total ASM (04)+(07)		
09	Total RSM		
10	Solvency Ratio (Total ASM/ Total RSM)		

Certification:

I, _____, the Auditor, certify that the above statements have been prepared in accordance with the Section 64VA of the Insurance Act, 1938; and the amounts mentioned therein are true to the best of my knowledge.

Place

Name and Signature of the Auditor

Date:

Countersignature:

Principal Officer:

Notes

1. Item No. 01 shall be the amount of the Adjusted Value of Assets in respect of policyholders' funds as mentioned in Form IRDA-Assets-AA.
2. Item No. 02 shall be the amount of Total Liabilities as mentioned in Form HG.
3. Item No. 03 shall be the amount of other liabilities arising in respect of policyholders' funds and as mentioned in the Balance Sheet
4. Items No. 05 shall be the amount of the Total Assets in respect of shareholders' funds as mentioned in Form IRDA-Assets-AA.
5. Item Nos. 06 shall be the amount of other liabilities arising in respect of shareholders' funds and as mentioned in the Balance Sheet;

N. RANGACHARY, Chairperson

[No. ADVT.-3/4/Exty/161/2000]